इकाई 18 समानता

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य
18.1 परिचय
18.2 समानता के विभिन्न प्रकार
18.2.1 औपचारिक समानता
18.2.2 अवसर की समानता
18.2.3 परिणामों की समानता
18.3 समानता के कुछ मूल सिद्धांत
18.4 समानता के विरुद्ध कुछ तर्क
18.5 उदारवादी असमानता–संबंधी औचित्य प्रतिपादन
18.6 समानता एवं नारी–अधिकारवाद
18.7 समानता और स्वतंत्रता
18.8 सारांश
18.9 कुछ उपयोगी संदर्भ
18.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है, समानता का अर्थ समझना और इस अवधारणा से जुड़े महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक विषयों पर ध्यान देना। इस इकाई को पढ़ने पर आप इस योग्य होंगे कि :

- समानता संबंधी मूल सिद्धांतों की संकल्पना को स्पष्ट कर सकें
- समानता के कुछ मूल सिद्धांतों पर चर्चा कर सकें
- औपचारिक समानता, अवसर की समानता और परिणामों की समानता को स्पष्ट कर सकें
- कुछ समतावाद–विरोधी विचारों की जाँच कर सकें
- उदारवादियों के असमानता–संबंधी औचित्य प्रतिपादन पर चर्चा कर सकें, और अन्ततः
- समानता व स्वतंत्रता के बीच संबंध का मूल्यांकन कर सकें।

18.1 परिचय

समानता अर्थात् बराबरी की धारणा आधुनिक राजनीति एवं राजनीतिक चिंतन का मुख्य विषय प्रतीत होती है। जन्म पर आधारित समाज में पदानुक्रम, सामाजिक स्थिति अथवा अन्य किसी भी मानदण्ड को प्रकृति प्रदत्त माना जाता था। अब यह बात नहीं है, वस्तुतः आधुनिक राजनीतिक सोच इस परिकल्पना से शुरू होती है कि सभी मनुष्य समान हैं। 1789 में फ्रांसीसी क्रांति व तदोपरांत अमेरिकी गृह–युद्ध – लोकतंत्र, समानता व स्वतंत्रता के विचार को व्यक्त करने में ये दो ऐतिहासिक रूप से बड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। एक ने मध्यकालीन क्रम–परम्पराओं को चुनौती दी, तो दूसरी ने जाति–आधारित असमानताओं की

ओर ध्यान आकृष्ट किया। तथापि, समानता के विचार को स्वीकृति मिलना आसान नहीं था। 1931 में आर.एच. टॉनी ने लेखन कार्य करते हुए ब्रिटिश समाज में एक पर बात शोक व्यक्त किया जिसका वर्णन उन्होंने 'असमानता के धर्म' के रूप में किया। किंतु, समानता का विचार आसानी से स्वीकार्य नहीं था। 1931 में लेखन करते हुये आर.एच. टॉनी ने ब्रिटिश समाज में 'असमानता के धर्म' पर अफसोस ज़ाहिर किया। जिस बात ने उन्हें परेशान किया था वह मात्र समाज में असमानताओं की विद्यमानता नहीं थी, वरन् उसको नैसर्गिक और अपरिहार्य के रूप में स्वीकार किया जाना था। द्वितीय विश्वयुद्धोपरांत काल में अनेक परिवर्तन हुए थे और समानता के विचार को काफ़ी व्यापक लोकप्रियता मिल चुकी थी। उपनिवेश बस्तियों में तीव्र लहर ने समानता विषयक बहस में एक और महत्त्वपूर्ण आयाम जोड़ दिया, जैसा कि नारी–आन्दोलन में है।

आज के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि समानता को मानव जीवन के एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है, तथापि इस बारे में बड़े झगड़े होते हैं कि समानता को कहाँ और कैसे व्यवहार में लाया जाए। एक और अधिक विवादग्रस्त क्षेत्र है समाज में धन–सम्पत्ति व आय के वितरण हेतु समानता के सिद्धांत का प्रयोग इस संदर्भ में यह उल्लेख करना उपयोगी होगा कि हाल के वर्षों में समतावाद–विरोधी सोच का गंभीर रूप से पुनरुत्थान हुआ है, जो कि उस राजनीतिक अर्थव्यवस्था वाली विचारधारा की बढ़ती लोकप्रियता से दृढ़ीकृत हुई है, जिसका तर्क है कि समतावादी उपाय बाज़ार क्षमता का गला घोंट देते हैं और आगे चलकर हर किसी की हालत खस्ता कर देते हैं।

समतावादियों से तदनुसार अपेक्षा है कि चुनौतियों की एक नयी श्रृंखला के जवाब में अपने तर्कों को सुस्पष्ट करें; वे आमतौर पर इस तथ्य को स्पष्टतः सिद्ध करने में लगे रहते हैं; कि वे सम्पूर्ण समानता की माँग नहीं कर रहे हैं और इस प्रकार, एकरूपता उनकी योजना का हिस्सा कतई नहीं है। इसके विपरीत, जिसको वे बचाने का प्रयास करते हैं वह है विविधता।

18.2 समानता के विभिन्न प्रकार

18.2.1 औपचारिक समानता

अंग्रेजी दार्शनिक जॉन लॉक मनुष्य की नैसर्गिक समानता पर आधारित समानता–संबंधी विचार के सर्वाधिक वाक्पटु समर्थकों में से एक हैं। (कहने की ज़रूरत नहीं कि लॉक की कार्य–योजना में महिलाओं का कतई स्थान नहीं था!) कैन्ट ने इस सार्वभौम मानवता के एक निष्कर्ष रूप में सार्वत्रिकता और समानता के बारे में बात कर इस विचार को और मज़बूती प्रदान की। इस प्रकार, औपचारिक समानता का अर्थ हो गया – अपनी सर्वमान्य मानवता के बल पर सभी व्यक्तियों से समान रूप से व्यवहार किया जाए।

इस विचार की सबसे महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है – विधि–संगत समानता अथवा कानून के समक्ष समानता का सिद्धांत। कानून के द्वारा सभी लोगों से समान रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए, बेशक उनकी जाति, प्रजाति, वर्ण, लिंग, धर्म, सामाजिक पृष्ठभूमि, इत्यादि कुछ भी हो। जबकि यह प्रजाति, लिंग, सामाजिक पृष्ठभूमि व इसी प्रकार के अन्य मानदण्डों पर आधारित विशेषाधिकारों के खिलाफ़ संघर्ष में एक स्वागतयोग्य कदम था, अपने आय में यह एक बहुत सीमित धारणा है। यह सिद्धांत इस तथ्य से इंकार करता है कि जाति, लिंग व सामाजिक पृष्ठभूमि द्वारा डाली गई अड़चनें इतनी दुर्दमनीय हो सकती थीं कि व्यक्ति उस औपचारिक समानता को लाभ उठाने में भी समर्थ नहीं होता जो कि कानून सभी व्यक्तियों को प्रदान करता है।

इस संदर्भ में यह ग़ौरतलब है कि यही वो अल्पता थी, जिसने मार्क्स को अपने निबंध 'ऑन दृजूइश क्वैश्चन' में इस समस्या पर सूक्ष्म दृष्टि डालने को प्रवृत्त किया। उसने निश्चयपूर्वक कहा कि औपचारिक समानता जबकि एक महत्त्वपूर्ण अग्रसर कदम है, वह मानव का उद्धार नहीं कर सकती। जबकि बाज़ार ने लोगों को सामाजिक दर्जे व अन्य समरूप श्रेणियों द्वारा लगाए गए अड़ंगों से मुक्त कर दिया, उसने तिस पर भी वर्गाधारित भेदों को पैदा कर दिया, जिनको कि निजी स्वामित्व की विद्यमानता द्वारा परिपुष्ट किया गया। इसका निहितार्थ था कि व्यक्तिजन नितान्त भिन्न बाज़ार मूल्य रखते हैं और इसी कारण से मार्क्सवादी जन इस संदर्भ में औपचारिक समानता का वर्णन बाज़ार समानता के रूप में करते हैं, जोकि समाज की गहन असमान प्रकृति को छिपाने हेतु कुछ ज़्यादा ही दिखावा है।

आज, समतावादी जन इस धारणा से दूर चले गए हैं कि सभी मनुष्यों को समान बनाया गया है और इसी कारण से, उन्हें समान अधिकार रखने चाहिए; ऐसा इस तथ्य की वजह से है कि मनुष्य जन अधिकांश महत्त्वपूर्ण पहलुओं में समान नहीं हैं। इसीलिए, आज, समानता शब्द विवरणकारी के स्थान पर एक व्यवस्थाकारी अर्थ में अधिक प्रयोग होता है; उन नीतियों का समर्थन किया जाता है जो मनुष्यों के कुछ वर्णनात्मक विशेष गुणों पर निर्भर न रहते हुए समानता के आदर्श को बढ़ावा देती हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अन्त देखें।

1) वह क्या था जिसने ब्रिटिश समाज के बारे में आर.एच.टॉनी को व्याकुल कर दिया?

.....

.....

.....

.....

.....

2) औपचारिक समानता सिद्धांत को दिशा–निर्देशित करने वाला मूल तत्त्वज्ञान क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

18.2.2 अवसर की समानता

सहज ही समझी जाने वाली, अवसर की समानता का अर्थ है उन सभी अवरोधों को दूर करना जो व्यक्तिगत आत्म–विकास में बाधा डालते हैं। इसका अर्थ है कि पेशे या व्यवसाय प्रतिभावान व्यक्ति के लिए ही खुले होने चाहिए और तरक्कियाँ योग्यताओं पर आधारित होनी चाहिए। सामाजिक स्थिति, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक पृष्ठभूमि व ऐसे ही अन्य कारकों का हस्तक्षेप नहीं होने देना चाहिए।

अवसर की समानता एक अत्यन्त आकर्षक धारणा है, जो उस बात से संबंधित है जिसका जीवन के आरम्भ बिन्दु के रूप में वर्णन किया जाता है। निहितार्थ यह है कि समानता यह अपेक्षा रखती है कि सभी व्यक्ति एक समतल क्रीड़ा–स्थल से जीवन शुरू करें। तथापि, यह ज़रूरी नहीं कि इसके परिणाम बिल्कुल भी समतावादी हों। यथार्थतः चूँकि हर व्यक्ति ने समान रूप से शुरुआत की, असमान परिणाम स्वीकार्य एवं वैध–सिद्ध होते हैं। इस असमानता को तब भिन्न–भिन्न नैसर्गिक प्रतिभाओं, कठोर श्रम–क्षमता अथवा भाग्य के भी शब्दों में स्पष्ट किया जाएगा।

यह लगता है कि इस तरह से बनी अवसर की समानता एक ऐसी व्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने का समान अवसर प्रदान करती है जो कि क्रम–परम्परागत रही है। अगर ऐसा है तो यह तत्त्वतः कोई समतावादी सिद्धांत प्रतीत नहीं होता। अवसर की समानता, इस प्रकार, एक असमतावादी समाज की ओर इशारा करती है, यद्यपि वह योग्यता के उच्च आदर्श पर आधारित, है। यह धारणा स्वयं को प्रकृति और परम्परा के बीच भिन्नता पर आधारित करती है। तर्क यह है कि वे भिन्नताएँ जो प्रतिभाओं, कौशलों, कठोर श्रम इत्यादि जैसे विभिन्न प्राकृतिक गुणों के आधार पर प्रकट होती हैं, नैतिक रूप से समर्थनीय हैं। तथापि, वे भिन्नताएँ जो परम्पराओं अथवा ग़रीबी, आश्रयहीनता जैसे सामाजिक रूप से बने भेदों से पैदा होती हैं, समर्थनीय नहीं हैं। सच्चाई, हालाँकि, यह है कि यह एक विशिष्ट सामाजिक पक्षपात है जो समाज में भेदों को स्पष्ट करने के लिए सुन्दरता अथवा बुद्धिमत्ता जैसी किसी प्राकृतिक भिन्नता को एक प्रासंगिक आधार बना देती है। तदनुसार, हम देखते हैं कि प्रकृति व परम्परा के बीच भेद इतना सुस्पष्ट नहीं है जैसा कि समतावादी बतलाते हैं।

अवसर की समानता को प्रतिभाशाली व्यक्तियों के लिए पेशे या व्यवसाय खुले रखना, निष्पक्ष समान अवसर उपलब्ध कराना और सकारी–भेदभाव सिद्धांत विषयक अनेक विसामान्यताओं को स्वीकृति के माध्यम से संस्थापित किया जाता है। ये सब इस प्रकार काम करते हैं कि समानता की व्यवस्था तर्कसंगत और स्वीकार्य लगे। निहित धारणा यह है कि जब से प्रतिस्पर्धा निष्पक्ष हुई है, लाभ अपने आप आलोचना से परे हो गया है। इस बात में कोई शक नहीं कि इस प्रकार की व्यवस्था ऐसे लोगों को जन्म देगी जो सिर्फ़ अपनी प्रतिभाओं एवं वैयक्तिक सहजगुणों पर ध्यान देंगे। यह बात उन्हें अपने लोगों के साथ किसी भी सामुदायिक अनुभूति से वंचित करती है, क्योंकि वे सिर्फ़ प्रतिस्पर्धा की भाषा में ही सोच सकते हैं। शायद, यह सिर्फ़ एक ऐसे समुदाय को जन्म दे सकती है जो एक ओर तो सफल व्यक्तियों का समुदाय होगा, और दूसरी ओर असफल व्यक्तियों का ऐसा समुदाय जो अपनी तथाकथित विफलता के लिए स्वयं को ही दोष देगा। तो भी अवसर की समानता के साथ एक और समस्या यह है कि वह एक पीढ़ी व दूसरी पीढ़ी की सफलताओं व विफलताओं के बीच एक बनावटी वियोजन पैदा करने का प्रयास करती है।

इस प्रकार, यह देखने में आता है कि समानता विषयक उदारवादी विचार अवसर की समानता पर आधारित है। यह वकालत, समानता संबंधी किसी भी यथेष्ट धारणा के विरुद्ध है क्योंकि ये वो अवसर हैं जो असमान परिणामों की ओर ले जाते हैं। यह सिद्धांत, इस प्रकार, परिणामों से असम्बद्ध है और सिर्फ़ प्रक्रिया में रुचि रखता है। यह पूरी तरह से इस उदारवादी विचार को कायम रखने के साथ है कि व्यक्तिजन समाज की बुनियादी इकाई हैं और समाज को अवश्य ही उनके लिए यह संभव बनाना होगा कि वे अपने निजी हितों को सिद्ध कर पाएँ।

क्या इसका मतलब यह हुआ कि समतावादी जन अवसर की समानता को अनदेखा करेंगे? उत्तर है स्पष्ट रूप से नहीं। तथापि, वे अवसर की समानता संबंधी एक अधिक व्यापक परिभाषा को लेकर चलेंगे, जो कि हर किसी को एक संतोषजनक एवं पालनयोग्य तरीके

से अपनी क्षमताओं को विकसित करने के साधन मुहैया करायेगी। एक समतावादी समाज कुछ लोगों को अपनी क्षमताएँ विकसित करने हेतु वास्तविक अवसर प्रदान देने से इंकार नहीं करेगा। इस अवसर का निष्कपट समतावादी प्रयोग एक सार्थक जीवन की ओर प्रवृत्त करेगा। चूँकि यह सुनिश्चित करना सम्भव नहीं है कि हर व्यक्ति एक सार्थक जीवन बिताए, ऐसी सामाजिक परिस्थितियों के लिए जो सभी व्यक्तियों को सार्थक जीवन व्यतीत करने का अवसर प्रदान करे, इस बात के लिए ही समतावादी जन प्रयास करेंगे।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अन्त देखें।

1) व्यक्तियों के विषय में वह मूल उदारवादी धारणा क्या है जो उनसे एक व्यापक रूप से असमान प्रसंग में अवसरों की समानता का समर्थन करवाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अवसर की समानता विषयक समतवादी विचार को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

18.2.3 परिणामों की समानता

तथापि, परिणाम पर नज़र डालने हेतु जीवन के आरंभ–बिंदु से आगे चलकर समानता के संबंधी धारणा एक और अभिव्यक्ति परिणामों की समानता के शब्दों में होगी। मार्क्स,

उदाहरण के लिए, यह विचार रखते थे कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से घिरा समानता हेतु कोई भी अधिकार पक्षपाती के सिवा कुछ और नहीं हो सकता। तदनुसार, उसने संपूर्ण समाजिक समानता के लिए, जोकि तभी संभव है यदि अन्य सभी समानताओं से निजी संपत्ति को समाप्त कर दिया जाये, तर्क दिया कि तब तक अपर्याप्त रहेगी जब तक कि परिणाम की समानता सुनिश्चित नहीं हो जाती।

परिणाम–संबंधी समानता के आलोचक यह बात रखते हैं कि इस प्रकार का काम निष्क्रियता, अन्याय और बुरी से बुरी नादिरशाही का रास्ता दिखलायेगा। हयेक ने, उदाहरण के लिए, तर्क दिया है कि लोग चूँकि बहुत भिन्न होते हैं, उनकी अभिलाषाएँ व लक्ष्य भिन्न होते हैं तथा कोई भी व्यवस्था जो उनसे समान रूप से सुलूक करती है, वस्तुतः असमानता में परिणत होती है। समानता हेतु प्रेरणा, यह तर्क दिया जाता है, वैयक्तिक स्वतंत्रता की कीमत पर होती है। समाजवादी समतावादी उपायों का लागू किया जाना, यह दलील दी जाती है, व्यक्ति की गरिमा और आत्म–सम्मान को गुप्त रूप से क्षति पहुँचाता है और ऐसे उपायों के साथ चलने वाला सहज पैतृकवाद व्यक्ति की एक विवेकपूर्ण पसंदकर्त्ता बनने संबंधी योग्यता को अस्वीकार करता है।

18.3 समानता के कुछ मूल सिद्धांत

समतावादी जन यह नहीं मानते कि हर व्यक्ति एक–सा है अथवा एक–सा होना चाहिए। यह कोई सहज यथातथ्य धारणा नहीं है। यह हमको कुछ ऐसे मर्म सिद्धांत प्रस्तुत करने में मदद करेगी, जिनके प्रति समतावादी जन वचनबद्ध होंगे। पहला वचन इस धारणा के प्रति है कि हर व्यक्ति अपनी मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने का अधिकार रखता/रखती है और जीवन–स्तर में व्यापक असंगतियों वाले लक्षण रखने वाला कोई भी समाज उन्हें स्वीकार्य नहीं है। वे एक ऐसे समाज के प्रति वचनबद्ध हैं जहाँ–जीवन दशाएँ सिर्फ़ सह्य ही नहीं, बल्कि सभी के लिए एक संतोषजनक एवं पालनयोग्य जीवन प्रदान करने में सक्षम भी हों।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण सिद्धांत समान आदर संबंधी है, जिसका निहितार्थ है – किसी भी प्रकार के अपमानजनक व्यवहार अथवा परिस्थितियों का विरोध; आदर्श रूप में, सहानुभूति पर आधारित एक समाज। एक समतावादी विचार न सिर्फ़ व्यक्तियों के बीच, बल्कि राष्ट्रों के बीच भी, आय व धन–सम्पत्ति में बड़े अन्तरों का विरोध करता है। इसमें सभी के लिए गरिमापूर्ण, रुचिपूर्ण एवं निरापद कार्य की संभावना के अतिरिक्त, अर्थव्यवस्था एवं कार्यस्थल का लोकतांत्रिक नियंत्रण भी शामिल होगा। राजनीतिक समानता, कहने की ज़रूरत नहीं, महज वोट देने अथवा किसी सार्वजनिक पद हेतु खड़े होने का अधिकार नहीं है, वरन् यह जीवन के सभी पहलुओं में नागरिक अधिकारों का एक व्यापक प्राधार एवं एक लोकतांत्रिक भागीदारी है, ताकि व्यक्तिजन एक अधिक सार्थक तरीके से अपने जीवन को नियंत्रित करने व कार्यरूप देने में समर्थ हों।

लैंगिक, प्रजातीय, नृजातीय व धार्मिक समानता समानता–संबंधी जटिल धारणा के कुछ अन्य घटक हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि हम समानताओं की कोई पूरी तरह से विस्तीर्ण सूची नहीं बना सकते, और इसी में अन्तर्निहित है समानता संबंधी अवधारणा की सुधारवादी प्रयोगक्षमता।

18.4 समानता के विरुद्ध कुछ तर्क

समानता, यह तर्क दिया जाता है, एक ऐसी अवधारणा है जो कि वास्तव में स्वीकार करने

योग्य नहीं है क्योंकि समाज और सामाजिक प्रक्रियाएँ एक प्रतिस्पर्धा से जुड़ी हैं, जिसमें न तो हर कोई समर्थ हो सकता है और न ही विजेता हो सकता है। हम ऐसी आपत्तियाँ परिणामों की समानता संबंधी अपने चर्चा के प्रसंग में पहले ही देख चुके हैं। प्रतिक्रिया स्वरूप यह कहा जा सकता है कि यह विरुद्ध तर्क समाज व व्यक्ति के स्वभाव की एक विशिष्ट व्याख्या से जन्मता है।

आज के युग में हयेक, फ्रीडमैन एवं नोज़िक के नाम उस विचार से जुड़े हैं जो समतावाद को आज़ादी के लिए एक ख़तरा मानता है। नोज़िक विशेष रूप से जॉन रॉल्स व द्वोर्के जैसे उदारवादियों के आलोचक हैं, इस बात के लिए कि वे अवसर की समानता को बढ़ाने के लिए कल्याणकारी विधानों के प्रति वचनबद्ध थे। उनके जवाब में, जो यह कहते हैं कि समाज में असमानता आत्म–सम्मान को गुप्त रूप से क्षति पहुँचाती है, नोज़िक जैसे उदारवादियों का तर्क है कि इसके विपरीत, यह समतावाद ही है जो लोगों से उनका आत्म–सम्मान छीन लेता है। नोज़िक का दावा है कि असमतावादी समाज व्यक्तियों की विशिष्टता एवं उनके बीच भेद को स्वीकार कर व्यक्तियों के प्रति अधिक सम्मान दर्शाते हैं। चूँकि एक समतावादी समाज सत्ता, पद, आय अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा पर आधारित किन्हीं भी भेदों से वंचित होगा, वहाँ आत्म–सम्मान के लिए कोई आधार न होगा, क्योंकि आत्म–सम्मान उन मानदण्डों पर आधारित होता है जो लोगों में भेद उत्पन्न करते हैं।

एक बड़ी सख्त आपत्ति वे लोग करते हैं जो यह मानते हैं कि समानता लागू करने का कोई भी प्रयास राज्य को मज़बूती प्रदान करने में परिणत होता है और इसकी वजह से वैयक्तिक स्वतंत्रता कमज़ोर पड़ती है। यही बात समानता व स्वतंत्रता के बीच संबंध विषयक पश्चिमी राजनीति–सिद्धांत में प्रसिद्ध सवाल के मर्म में है जिस पर हम थोड़ा बाद में चर्चा करेंगे।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अन्त देखें।

1) स्पष्ट करें कि किस प्रकार नोज़िक के अनुसार एक समतावादी समाज लोगों से उनका आत्म–सम्मान छीन लेता है।

.....

.....

.....

.....

.....

18.5 उदारवादी असमानता–संबंधी औचित्य प्रतिपादन

उदारवादी जन लोगों से भिन्न व्यवहार किए जाने हेतु अनुकूल मानदण्डों के रूप में लिंग, प्रजाति, अथवा वर्ग को अस्वीकार करते हैं, परन्तु वे यह ज़रूर मानते हैं कि यदि असमानताएँ उनके भिन्न गुण–अवगुण अथवा योग्यता के आधार पर अर्जित एवं यथोचित हैं, तो यह बात न्यायसंगत और उचित है। तदनुसार, उदारवादी सिद्धांत हठात् यह दावा करता है कि जब तक भी असमानता को समाज हेतु विशेष गुणों व योग्यताओं अथवा विशेष योगदान के लिए पारितोषिक अथवा पुरस्कार/दण्ड के आधार पर सही ठहराया जा सकता है, यह स्वीकार्य रहेगा। यहाँ हम इस बात पर ध्यान दिए बग़ैर नहीं रह सकते कि समाज

के लिए जो भी पुरस्करणीय, विशेष अथवा योगदान–स्वरूप है, सभी उक्त समाज की विशिष्टताओं से सीमाबद्ध है। इसके अतिरिक्त, किसी व्यक्ति के योगदान के मूल्य को ताक पर रख देना बहुत मुश्किल है, और यदि कोई योगदान देने के बाद वापस ले जाता है, तो क्या वह वाक़ई कोई योगदान कर रहा है? यह विचार समग्रता में बुनियादी उदारवादी विचार के विरुद्ध लगता है कि सभी व्यक्ति समान रूप से योग्य व सम्मान्य हैं, और लोगों को प्रतिभाओं व योग्यताओं की एक गठरी सा बना देता है।

आज के युग में, तथापि, रॉल्स एवं द्वोर्के जैसे आधुनिक उदारवादियों ने असमानता को सही ठहराने के लिए मानदण्डों के रूप में योग्यता एवं गुण/अवगुण को नहीं माना है। वास्तव में, वे सभी जनों की भिन्न वैयक्तिक प्रतिभाओं व कौशलों पर ध्यान दिए बग़ैर उनके समान नैतिक गुण पर आधारित सम्मान की समानता की वकालत करते हैं। वे इस समानता को इस धारणा पर आधारित करते हैं कि सभी मनुष्य विकल्प चुनने एवं जीवन–योजना तैयार करने की योग्यता से समान रूप से सम्पन्न हैं। रॉल्स, उदाहरण के लिए, योग्यता अथवा प्रयास के अनुसार पारितोषिकों के वितरण को नैतिक रूप से यादच्छिक मानकर अस्वीकार करते हैं, क्योंकि योग्यताओं व कुशलताओं में अंतर, वह तर्क देते हैं, सहज ही प्रकृति के तथ्य हैं और इन कुशलताओं व योग्यताओं की विद्यमानता अथवा अभाव के कारण किसी को लाभ अथवा हानि नहीं होनी चाहिए। इस कारण से, वह इन नैसर्गिक योग्यताओं के व्यवहार का सामाजिक गुण के रूप में समर्थन करते हैं, ताकि 'समाज का बुनियादी ढाँचा व्यवस्थित किया जा सके, ताकि ये संभाव्यताएँ सबसे खराब किस्मत वाले के लिए भी भलाई के काम करें'।

तथाकथित 'भेद सिद्धांत' जो कि रॉल्स स्पष्टतया व्यक्त करते हैं, वह उनकी समझ में सर्वोत्तम सिद्धांत है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्राकृतिक गुण अनुचित लाभों की ओर प्रवृत्त न करें। यह सिद्धांत अपेक्षा रखता है कि सामाजिक व आर्थिक असमानताएँ इस प्रकार व्यस्थित हों कि ये दोनों शर्तें पूरी हों : (अ) ये न्यूनतम लाभांवितों के अधिकतम लाभार्थ हों और (ब) ये अवसर की उचित समानता संबंधी शर्तों के तहत सभी के लिए खुले उच्च पद व स्थानों से जुड़ी हों। यह, तदनुसार, परम्परागत उदारवादी अधिकारों से भिन्न समानता की एक अधिक व्यापक समझ है। असमान पारितोषिक भिन्न योग्यताओं के आधार पर नहीं, वरन् प्रोत्साहन के रूप में न्यायोचित ठहराये गए हैं, ताकि वे न्यूनतम लाभांवितों को लाभ पहुँचायें। द्वोर्के समानता विषयक परम्परागत उदारवादी विचारों से भी अहमति जताते हैं और कुछ पुनर्वितरण एवं कल्याणकारी नीतियों की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं।

मैकफ़र्सन ने रॉल्सवादी समानता की इस आधार पर आलोचना की है कि वह वर्गों के बीच संस्थागत असमानताओं की अपरिहार्यता को मानते हैं। ऐसा करते हुए रॉल्स इस तथ्य से इंकार करते हैं कि वर्गाधारित असमानताएँ विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों के बीच असमान सत्ता–संबंधी को जन्म देती हैं और इस प्रकार, समानता के अन्य पहलुओं पर असर पड़ता है।

18.6 समानता एवं नारी–अधिकारवाद

नारी–अधिकारवादी जन समानता के मुद्दे को लिंग–भेद के नज़रिए से देखते हैं। इस संबंध में एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है सूज़न ओकें कृत *जस्टिस, जैंडर एण्ड द फ़ैमिली* (1989)। यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि समान अवसर, कानून–निर्माण अथवा विभिन्न क्षेत्रों हेतु समानता सिद्धांतों के प्रसार द्वारा पुनर्वितरणकारी न्याय, सारतः, समानता पैदा नहीं कर सकते, क्योंकि ये नियम व सिद्धांत एक ऐसे वातावरण में संचालित होते हैं जो कि पहले से ही लिंगों के बीच असमानता से दूषित हैं, यथा ऐसी असमानता से जो सामाजिक प्रथाओं

से जन्मी है। इनमें से अनेक प्रथाएँ महिलाओं के प्रति सीधे विभेदकारी नहीं है, बल्कि उनका समग्र प्रभाव होता है असमानता को मज़बूती प्रदान करना और उसे वैधता का एक जामा पहनाना। तदनुसार, यद्यपि कानून औपचारिक रूप से लिंगों के बीच भेद नहीं कर सकता, हालत यह है कि विशिष्ट व्यवसायों में महिलाओं को अलग रखने की प्रवृत्ति पायी जाती है और विवाहित महिलाएँ जो व्यवसायरत हैं, एक लिंगभेद के पूर्वाग्रह से ग्रसित समाज में खास तौर पर अलाभांवित हैं।

नारी–अधिकारवादी जन यह ध्यान दिलाते हैं कि महिलाओं के अधिकार व कर्त्तव्य संबंधी असमानता के विचार–पारिवारिक निर्णयन् में उनका कमज़ोर स्वर, बच्चों के पालन–पोषण संबंध उनका दायित्व एवं श्रम–बाज़ार से तदन्तर उनकी निकासी – का विकल्पों की **सहज** एवं स्वैच्छिक कार्य–प्रणाली से कुछ लेना–देना नहीं है, बस क्योंकि भूमिकाएँ सामाजिक रूप से **बनी हुई** हैं!

तथापि, साथ ही, यदि राज्य लिंगभेद–संबंधी विशिष्टीकरण को दूर करने में, खासकर पारिवारिक जीवन में, शामिल होता है तो इस बात पर शायद नारी–अधिकारवादी भी नाराज़गी व्यक्त करेंगे। यह, संभवतः, अधिक आसान होगा कि हम लिंगभेद–असमानता के प्रति जागरुक हों और उसे सामाजिक काम प्रथाओं एवं सामाजिक रूप से संरचित भूमिकाओं में खोजें, बल्कि यह मुश्किल है कि एक उपचारी उपाय ढूँढने के लिए हम आगे बढ़ें। जब तक कि महिलाएँ स्वयं अपनी असमानता, परिवार में अपनी अधीनस्थ भूमिका के प्रति जागरूक नहीं होतीं, और सामाजिक ढाँचों को पुनः अनुकूलित करने के लिए सामने नहीं आतीं, लिंगभेद समानता के संबंध में ठोस कुछ नहीं किया जा सकता।

18.7 समानता और स्वतंत्रता

अक्सर यह दावा किया जाता है कि एक तो स्वतंत्रता व समानता विरोधात्मक हैं, और दूसरे यह विवाद इसी कारण समाधेय नहीं है। द तौकवि ने समानता को स्वतंत्रता के सामने खड़े एक संभावित ख़तरे एवं बहुमत की निरंकुशता के रूप में देखा, जैसा कि वह व्यापक सानुरूपता भय से देखते थे, फ्रीडमैन, नोज़िक एवं हयेक इस विचार से जुड़े कुछ अभी हाल के नाम हैं। इस प्रकार की स्थिति जो करती है, वो है – स्वतंत्रता व समानता के बीच सोच–समझकर कोई न कोई विवाद खड़ा करना, यह सुझाते हुए कि समानता लागू करने के प्रयासों का तत्काल अर्थ होता है – बलप्रयोग और स्वतंत्रता की समाप्ति। वे संकेत करते हैं कि चूँकि व्यक्तिजन अपने–अपने कौशलों व योग्यताओं के लिहाज से आपस में भिन्न होते हैं, उनके जीवन में भिन्नताएँ तो अवश्यंभावी हैं, और तदनुसार असमानता की ओर एक सहज प्रवर्षत्ति तो होगी ही। इसको सुधारने का कोई भी प्रयास सत्तावादी रोध के साथ ही होगा और इसी कारण से स्वतंत्रता समाप्त हो जायेगी।

यहाँ समानता की बराबरी एकरूपता से करने का सुविचारित प्रयास किया जाता है, समतावादी समाज कोई समरूप समाज नहीं होता। यह एक ऐसा समाज है, जहाँ हर व्यक्ति अपनी वैयक्तिक एवं भिन्न प्रतिभाओं के साथ एक समान रूप से सार्थक एवं यथेष्ट जीवन व्यतीत कर सकता/सकती है।

वे लोग जो यह दावा करते हैं कि समानता एवं स्वतंत्रता असमाधेय हैं, अपनी बात स्वतंत्रता की एक विशिष्ट समझ से शुरू करते हैं; जिसका वर्णन स्वतंत्रता की 'नकारी संकल्पना' के रूप में किया जाता है। वस्तुतः वे दावा करते हैं कि स्वतंत्रता की सकारी संकल्पना स्वतंत्रता कतई नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता के छद्म वेश में कोई चीज है। स्वतंत्रता संबंधी नकारी वर्णन स्वतंत्रता को एक व्यक्ति के जीवन में जानेबूझे हस्तक्षेप के अभाव के रूप में देखता है।

विपरीतः, वे स्वतंत्रता को उन विकल्पों के चुनने हेतु उपलब्धता एवं योग्यता के रूप देखते हैं, जो सार्थक एवं प्रभावी हों। स्वतंत्रता–संबंधी इस प्रकार की समझ इसे तत्काल ही सामाजिक एवं संस्थागत सत्ता प्राधारों तक पहुँच, भौतिक व आर्थिक आवश्यकताएँ पूरा करने, तथा निस्संदेह, शिक्षा व ज्ञान पर अधिकार आदि मामलों से जोड़ेगी। इसी कारण, समतावादियों का कहना है कि सामाजिक प्रभाव आर्थिक धन–सम्पत्ति एवं शिक्षा के लिहाज से समानता यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है कि हर व्यक्ति एक सार्थक एवं यथेष्ट जीवन व्यतीत करे। यह काम करने में समतावादी जन समता का रास्ता अख़्तियार किए हुए हैं और सत्ता के सामाजिक एवं संस्थागत प्राधारों द्वारा दबे हुए हैं। धन–संपत्ति के वैषम्य से स्वतंत्रता गंभीर रूप से बाधित है। शिक्षा, हमें नए विचारों को ग्रहण करने में समर्थ करके और हमें विभिन्न कौशलों से शिक्षित कर निस्संदेह एक युक्तिकारी कारक की भूमिका निभाती है। इसी कारण, इन मूल सिद्धांतों की पहुँच में कोई भी असमानता, यह तर्क रखा जा सकता है, उस सार्थक व यथेष्ट जीवन को जीने हेतु व्यक्ति की समर्थता को सीमित कर देगी जो कि समतावादियों के लिए स्वतंत्रता की धारणा का सार–तत्त्व है।

समतावादी यह तर्क देते हैं कि मनुष्य महज अकेले छोड़ दिए जाने से स्वतंत्र नहीं हो जाता। उनका कहना है कि अधिकार, धन–सम्पत्ति व शिक्षा स्वतंत्रता के मूल स्रोत हैं और वह समाज जो उन पहलुओं में समानता सुनिश्चित नहीं कर सकता, स्वतंत्र समाज नहीं हो सकता। तदनुसार, हम देखते हैं कि स्वतंत्रता व समानता विरोधात्मक होने से बढ़कर दरअसल महज संगत ही नहीं हैं, बल्कि एक–दूसरे पर निर्भर भी हैं।

बीसवीं सदी का अधिकांश समय ऐसा था, जब समानता सिर्फ़ औचित्य प्रतिपादन में काम आती थी। इसको ऐसे केन्द्रीय सिद्धांत के रूप में देखा जाता था जिसके इर्द–गिर्द राष्ट्रों व समाजों को स्वयं को संगठित करना होता था। बहरहाल, नई सदी के आगमन के साथ ही, समानता को नैतिक रूप से अवांछित सिद्ध करने का एक गंभीर बौद्धिक एवं राजनैतिक प्रयास किया जा रहा है। संपत्ति के अधिकार की अपरिहार्य प्रवषत्ति एवं समाज की अनिवार्यतः बहुवादी प्रवषत्ति के चलते समतावाद–विरोधी दावे को समानता के अनुशीलन द्वारा गंभीर रूप से ख़तरा रहेगा।

18.8 सारांश

इस इकाई में हमने इस बात पर सूक्ष्म दृष्टि डाली कि समानता की अवधारणा का मतलब क्या है। इस तथ्य के साथ यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है कि हम ऐसे समाज में रहते हैं जो अनेक प्रकार की असमानताओं से लड़ रहा है। समानता अपने बहुत ही सीमित अर्थ में औपचारिक समानता है जो कि सभी मनुष्यों की सार्वभौम मानवता संबंधी धारणा को स्वीकार करती है। अवसर की समानता, जिसको हमने देखा, का प्रयोग असमानता को अन्यतम रूप से सही ठहराने के लिए किया जा सकता है। परिणामों की समानता समानता शब्द के अर्थ को विस्तार प्रदान करती है। हमने समानता संबंधी आधुनिक उदारवादी बचाव पक्ष के साथ–साथ इस बात का भी अध्ययन किया कि यदि वह समाज में केवल सबसे खस्ता हालत वालों के अधिकतम लाभ हेतु ही काम करता हो तो वह असमानता को किस प्रकार सही ठहराता है। हमने समानता संबंधी नारी–अधिकारवादी समालोचना पर भी ध्यान दिया।

अन्ततः, हमने समानता व स्वतंत्रता के बीच संबंध विषयक बहस पर सूक्ष्म दृष्टि डाली, और देखा कि स्वतंत्रता संबंधी एक नकारी अवधारणा इन दो अवधारणाओं को प्रतीयमानतः विवादास्पद बनाती है।

18.9 कुछ उपयोगी संदर्भ

नोर्मैज, पी. बेरी, *ऐन इण्ट्रोक्शन टु माडर्न पॅलिटिकॅल थिअरी*, मैकमिलन, लंदन, 2000

हैल्ड, डैविड, *पॅलिटिकॅल थिअरी टुडे,*

स्टिबार्ट, रॉबर्ट एम., *रीडिंग्स इन सोशल एण्ड पॅलिटिकॅल फिलॉसफी*

18.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) टॉनी न सिर्फ़ असमानता की विद्यमानता को लेकर परेशान थे, बल्कि इस बात से भी कि इस असमानता को स्वाभाविक एवं अपरिहार्य के रूप में स्वीकार किया जाता है।

2) औपचारिक समानता का मार्गदर्शन करने वाला बुनियादी सिद्धांत यह है कि चूँकि सभी मनुष्य समान बनाये गए हैं, उनके साथ समान व्यवहार होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) यह उदारवादी धारणा है कि व्यक्तिजन समाज की बुनियादी इकाई हैं और समाज को व्यक्तिजनों के लिए अवश्य ही यह संबल बनाना चाहिए कि वे अपने निजी हितों की पूर्ति कर सकें।

2) एक समतावादी समाज कुछ लोगों को अपनी क्षमताएँ विकसित करने के लिए सच्चा अवसर देने से इंकार नहीं करेगा। इस अवसर का वास्तविक समतावादी प्रयोग एक सार्थक जीवन व्यतीत करना होगा। चूँकि यह सुनिश्चित करना संभव है कि हर व्यक्ति एक सार्थक जीवन जिए, समतावादी जन जिसके लिए प्रयास करेंगे वह उन सामाजिक परिस्थितियों की रचना होगी जो सभी व्यक्तियों को सार्थक जीवन जीने का अवसर प्रदान करेंगी।

बोध प्रश्न 3

1) नोज़िक यह दावा करते हैं कि असमतावादी समाज व्यक्तियों की विशिष्टता एवं उनके बीच भेद को स्वीकार कर व्यक्तिजनों के प्रति अधिक सम्मान दर्शाते हैं। चूँकि एक समतावादी समाज से प्रभाव, पद, आप व सामाजिक स्थिति पर आधारित भेद दूर कर दिए जाएँगे, आत्म–सम्मान के लिए आधार नहीं होगा, क्योंकि आत्म–सम्मान उन मानदण्डों पर आधारित होता है जो लोगों में भेद करते हैं।